आत्मिक अधिकार

फ्रैंकलीन के नोट्स

I.	परिचय	1
II.	यीशु, अधिकार के आधीन मनुष्य	2
III.	पहला विद्रोह	4
IV.	अधिकार को अस्वीकार करने के परिणाम	7
V.	परमेश्वर द्वारा नियुक्त अधिकार का ढांचा	13
	A. परिवार	13
	B. सरकार	14
	C. चर्च	14
	D. व्यापार	15
VI.	हमारे अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन दिखाना	16
VII.	अनाज्ञाकारिता के चार कारण	17
VIII.	अधिकारियों के लिए हमारी प्रतिक्रिया	19
IX.	जब आपसे ऐसा काम करने को कहा जाए जिसे आप गलत समझते हैं, तो वे सात कदम जो आपको उठाने हैं	21

आत्मिक अधिकार

फ्रैंकलीन के नोट्स

I. परिचय

सर्वशक्तिमान परमेश्वर "अधिकारी" है।

अधिकारी

1. जिसमें आज्ञा देने और उन्हें लागू करने का अधिकार और सामर्थ्य है।

2. किसी अन्य को दी गई सामर्थ्य

इसका एक अच्छा उदाहरण : **लूका 7:2-10** में सूबेदार का विश्वास है
किसी सूबेदार का एक दास ... बीमारी से मरने पर था ... **पर वचन ही कह दे** तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। 8 **मैं भी पराधीन मनुष्य हूं**; और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक को **कहता हूं, जा**, तो वह जाता है, और दूसरे से कहता हूं **कि आ,** तो आता है; और आपके किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे करता है। 9 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और उस ने मुंह फेरकर उस भीड़ से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, मैं तुम से कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी **ऐसा विश्वास** नहीं पाया।

अतः, हम यहाँ सबसे **पहली** और बहुत महत्वपूर्ण सच्चाई सीखते हैं :

आपको तब तक अधिकार प्राप्त नहीं होगा, जब तक आप **पराधीन** नहीं होंगे।

प्रेरितों के काम 8:12-24 शमौन पतरस और यूहन्ना के अधिकार को खरीदना चाहता था।

सच्चा अधिकार, उच्च अधिकारी द्वारा दिया जाता है। यदि अधिकार प्राप्त **नहीं** बल्कि छीना जाए ... **तो वह विद्रोह है।**

एक और उदाहरण : स्क्किवा नामक महायाजक के सात पुत्रों का है :
प्रेरितों के काम 19:11-17 परन्तु कितने यहूदी जो झाड़ा फूंकी करते फिरते थे, यह कहने लगे, कि जिन में दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूंके कि जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूं। ... 15 पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, कि यीशु को मैं जानती हूं, और पौलुस को भी पहचानती हूं; परन्तु तुम कौन हो? 16 और उस मनुष्य ने जिस में दुष्ट आत्मा थी; उन पर लपक कर, और उन्हें वश में कर लिया, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।

इससे हम **दूसरी सच्चाई** सीखते हैं :
आत्मिक युद्ध के लिए आत्मिक अधिकार की आवश्यकता है।

हमें इस बात का निश्चय होना चाहिए कि हम अधिकार के आधीन हैं और इससे पहले कि हम परमेश्वर के लिए कोई कार्य करें हमें वह अधिकार दिया जाता है।

"कुछ बुलाए जाते हैं ... कुछ भेजे जाते हैं ... कुछ उठकर चल देते हैं।"
उदाहरण : 2 शमुएल 18:19-23 अहीमास दौड़कर राजा दाऊद को समाचार देना चाहता था।

II. यीशु अधिकार के **आधीन मनुष्य** था, इसलिए वह **अधिकार** और **सामर्थ्य** के साथ **बात करता था।**

"मानव यीशु मसीह" ने अपना अधिकार कैसे प्राप्त किया?

हम भी वैसा ही कर सकते हैं :

फिलिप्पियों 2:5-11

(5) जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था **वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।**

- "स्वभाव हो" एक आज्ञात्मक क्रिया है। एक आदेश, अधिकार के साथ

(6) जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी **परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।** पहला कदम

हालाँकि उसने हमें अपनी इच्छा अनुसार कार्य करने का अधिकार दिया है

पर हमें अपने अधिकार को प्रभु यीशु मसीह के लिए समर्पित कर देना है या उसे त्याग देना है।

क्या यह हमारा राज्य है ... या उसका?

क्या वह हमारा प्रभु है? या हम अपने जीवन के स्वयं प्रभु हैं?

लूका 6:46 **जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?**

व्यवस्थाविवरण 12:8-9 **जैसे हम आजकल यहां जो काम जिस को भाता है वही करते हैं** वैसा तुम **न** करना

न्यायियों 17:6 उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; **जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था॥**

नीतिवचन 12:15 **मूढ़ को अपनी ही चाल** सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।

फिलिप्पियों 2:7 **वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया**, और **दास** (व्य.15:12-17) का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। दूसरा कदम

- सब मनुष्य पद, प्रतिष्ठा, महत्वपूर्ण स्थानों की खोज में रहते हैं।
- परमेश्वर का तरीका : पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करो" मत्ती 6:33
- मत्ती 20:26 जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने।

यूहन्ना 5:19-20 इसलिए यीशु ने उत्तर देते हुए उन से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ **कि पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता,** केवल **वह** जो पिता को करते **देखता है**, क्योंकि जो कुछ पिता करता है, उन्हीं कामों को पुत्र भी ठीक उसी रीति से करता है। क्योंकि **पिता पुत्र से प्रेम करता है**, और वह उन सब कामों को **उसे दिखाता है** जिन्हें वह स्वयं करता है, और वह इनसे भी कहीं बड़े कामों को उसे दिखाएगा जिस से कि तुम आश्चर्य करो।

यूहन्ना 1:35-39 दो शिष्य यीशु के पीछा गए .. और यीशु ने कहा **"आओ** और **देख लो"**।

लूका 24:31 इम्माऊस के रास्ते पर दो लोग ... **उन की आंखे खुल गईं**; और **उन्होंने उसे पहचान लिया।**

हबक्कूक 2:1 मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, ... **और ताकता रहूँगा कि मुझ से वह क्या कहेग?**

भजन 5:3 हे यहोवा**, भोर** को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी, मैं भोर को प्रार्थना करके **तेरी बाट जोहूँगा।**

यूहन्ना 5:30 **मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता;** जैसा **सुनता हूं,** वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि **मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं।**

यूहन्ना 13:1-4; 23-26 उसकी सेवा और दूसरों की सेवा का आरंभ घनिष्ठता से होता है, उसकी वाणी को **सुनकर।**

नीतिवचन 8:34 क्या ही **धन्य** है वह मनुष्य **जो मेरी सुनता**, वरन् मेरी डेवढ़ी पर प्रतिदिन **खड़ा रहता**, और मेरे द्वारों के खंभों के पास **दृष्टि लगाए रहता है।**

मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं। यह वह कुंजी है जो अधिकार के साथ उसकी सेवा करने का द्वार खोलती है।

फिलिप्पियों 2:8 **और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया**, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि **मृत्यु**, हां, **क्रूस की मृत्यु भी सह ली।** तीसरा कदम

- यीशु ने आज्ञा का पालन किया, चाहे इसके लिए उसे कुछ भी मूल्य चुकाना पड़ा या दुःख उठाना पड़ा।

- मत्ती 16:24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो **अपने आप का इनकार करे** और **अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले।** और हम अधिकार और सामर्थ्य में चलते हैं

फिलिप्पियों 2:9 **इस कारण** (मृत्यु तक आज्ञाकारी रहने के कारण) **परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया** जो सब नामों में श्रेष्ठ है।

- जब आप इन तीन कदमों को बढ़ाते हैं तो वह आपको ऊँचा उठता है और आपको अपने द्वारा नियुक्त स्थान देता है।

याकूब 4:10 प्रभु के सामने **दीन बनो** तो **वह तुम्हें प्रतिष्ठित करेगा।**

नीतिवचन 22:4 नम्रता तथा यहोवा के भय मानने का प्रतिफल धन, **सम्मान** और जीवन है।

यूहन्ना 12:26 यदि कोई **मेरी सेवा** करना चाहे तो **मेरे पीछे चले।** और जहाँ मैं हूँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो **पिता उसका सम्मान करेगा।**

तब यीशु ने अपने क्रूसिकरण और पुनरुत्थान के बाद कहा :

स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। 19 इसलिये **तुम जाकर** (अधिकार दिया गया) सब जातियों के लोगों को **चेला बनाओ** और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से **बपतिस्मा** दो। 20 और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें **आज्ञा दी है, मानना सिखाओ**: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥ मत्ती 28:18-20

यीशु आदम द्वारा खोए अधिकार को पुनः प्राप्त करता है और वह उस **अधिकार को हमें सौंपता है** कि हम उसकी आज्ञा और इच्छा को मानें।

जब हम अपने स्वयं के अधिकार का त्याग करते हैं, उसकी और अन्यों की सेवा करते है, और अपने आपको दीन करते हैं तो हम उसके भरोसे को अर्जित करते हैं और फिर हमें वह अधिकार दिया जाता है।

फिलिप्पियों 2:10 जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। 11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥

- उदाहरण : लूका 10:1-3, 9, 16-20 ... मैंने तुम्हें अधिकार दिया है

सच्चा अधिकार उच्च अधिकारी के द्वारा दिया जाता है। यदि अधिकारी ने **नहीं** दिया बल्कि ऐसे ही ले लिया है तो ... **वह विद्रोह कहलाता है।**

रोमियों 13:1-2 हर एक व्यक्ति **शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे**, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; ... **इसलिये जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है,** और सामना करनेवाले **दण्ड** पाएँगे।

हमारी तीसरी सच्चाई : जो उसने हमें बताया है उसके विरुद्ध **विद्रोह** करने का अर्थ है **परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करना** और इसके परिणामस्वरूप दंड आता है।

- अतः यह हमारे ध्यान को देश की कानून व्यवस्था की ओर ले जाता है :
  रुकने का संकेत - गति सीमा - टैक्स, और इस प्रकार अन्य बातें

III. प्रभु परमेश्वर के विरुद्ध **पहला विद्रोह** उसके द्वारा रचे स्वर्गदूत **लूसिफर** ने किया था (यशायाह 14:12-16; यहेजकेल 29:12-19)।

लूसिफर ने उस अधिकार को लेना चाहा जो उसे नहीं दिया गया था और उसने परमेश्वर के विरुद्ध **विद्रोह** किया।

लूसिफर का **दंड** : नाम बदल दिया / अपना पद खो दिया/ स्वर्ग से नीचे पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और फिर वह अधोलोक और आग की झील डाला जाएगा।

अधिकारी के विरुद्ध विद्रोह **शैतानी सिद्धांत** है और इसका परिणाम ताड़ना और दंड होता है।

शैतान का लक्ष्य है कि जितने हो सके उतने लोग विद्रोह करने में उसके साथ हों। उसका पहला शिकार आदम और हव्वा थे और फिर उसके अनगिनत वंशज हुए।

दूसरा विद्रोह : आदम और हव्वा :

परमेश्वर ने **आदम और हव्वा** को इस पृथ्वी पर अधिकार दिया (उत्पत्ति 1:28)। परंतु उन्होंने उस सर्प के तर्क को सुनने और मानने के बाद परमेश्वर के वचन को इनकार करने और स्वयं के अधिकार का चुनाव किया। ऐसा करके वे **शैतान के दास बन गए।**

- रोमियों 6:16 **क्या तुम नहीं जानते**, कि **जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो,** उसी के दास हो; और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे **आज्ञा** मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है।

आदम और हव्वा ने **पृथ्वी के अधिकार को जो उन्हें दिया था, उसको दे दिया** - जिसका उन्होंने **कहना माना,** वह **दुष्ट** जो मारता, चोरी करता और नाश करता है। इसकी पुष्टि **यीशु** को कहे गए शैतान के इस कथन से होती है :

- लूका 4:5-7 तब शैतान उसे ले गया और उस को पल भर में **जगत के सारे राज्य दिखाए।** 6 और उस से कहा; **मैं यह सब अधिकार, और इन का वैभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है;** और जिसे चाहता हूं, उसी को दे देता हूं। 7 इसलिये, यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा की **ताड़ना** की और उन्हें वाटिका (परमेश्वर के राज्य का एक प्रकार) से बाहर निकाल दिया - **वे अब भी परमेश्वर के थे** (परमेश्वर ने उन्हें चमड़े से ढांपा और लहू बहाया गया। उत्पत्ति 3:21) - लेकिन अब वे **अंधकार के राज्य में रहने लगे** (कुलुस्सियों 1:13) जिसे **"संसार का शासक" नियंत्रित** करता है। (यूहन्ना 12:31; 16:11)

सभी मनुष्य आज भी इसी दशा में **तब तक** रहते हैं जब तक वे **प्रभु यीशु मसीह** के उद्धार को ग्रहण नहीं कर लेते।

- कुलुस्सियों 1:13 **उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,**

कृपया इस बात को पहचानें - इस बारे में सावधान रहें - कि आप किसकी बात सुन रहे हो और किसका **कहना मान रहे हो।**

यह जानने के लिए कि वह दुष्ट आपको "वचन" से धोखा नहीं दे रहा, जैसा उसने **यीशु** के साथ करने की कोशिश की थी, केवल एक ही तरीका है कि आप वचन को जानें।

- भजन 119:11 मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।
- मत्ती 7:13-14 सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और **बहुतेरे** हैं जो उस से प्रवेश करते हैं (विद्रोही भीड़ के पीछे चलते हुए)। 14 क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और **थोड़े** हैं जो उसे पाते हैं (प्रभु के पीछे चलना)। भजन 1 ; नीतिवचन 4:14-23 ; 10:9

आप किस के पीछे चल रहे हैं? भीड़ के? या प्रभु के?

IV. अधिकार अस्वीकार करने के परिणाम - कुछ बहुत ही गंभीर

राजा शाऊल द्वारा उसके अधिकार को न मानने का उदाहरण :

1. उसके बच्चे उस मीरास को प्राप्त नहीं कर पाए जिन्हें वे प्राप्त कर सकते थे।

1 शमुएल 13:13-14 शमूएल ने शाऊल से कहा, "तू ने मूर्खता का काम किया है; तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं **तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता।** परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूँढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, **क्योंकि** तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।"

2. उसने अपने पद और सेवकाई को खो दिया

1 शमुएल 15:10-11 तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुंचा, ...**शाऊल ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया,** और **मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।**

पद 22-23 शमूएल ने कहा (शाऊल से), "क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के **माने जाने** से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख, **बलवा करना और भावी कहने वालों से पूछना** (जो दुष्टात्माओं की जादुई शक्ति का प्रयोग करके बतलाते हैं, और इस प्रकार दुष्ट को अपने ऊपर वैध अधिकार देते हैं) एक ही **समान पाप** है, और **हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।** तू ने जो यहोवा की बात को **तुच्छ जाना, इसलिये उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है** (व्यवस्थाविवरण 18:10 से आगे)।

शाऊल की निरंतर **आज्ञाकारिता** से उसने अपने पद की हानि उठाई **(अनंत जीवन की नहीं)** और ऐसा इसलिए था क्योंकि उसको इस बात की ज़्यादा चिन्ता थी कि लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे बजाय इसके कि परमेश्वर उसके बारे में क्या सोचते हैं।

पद 24 ... मैंने तो अपने प्रजा के लोगों का भय मानकर .."

जिसका आप भय मानते हो उसका आप कहना मानोगे।
यदि प्रेम पर्याप्त **प्रेरणादायक** नहीं है तो **भय** होगा ही।

नीतिवचन 16:6 यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं।

अपने स्वर्गीय पिता के समान, माता-पिताओं को भी प्रेम और ताड़ना (यदि आवश्यक हो तो भय बैठा कर) दोनो का इस्तेमाल अपने बच्चों को आज्ञा मानना सिखाने में करना चाहिए।

परमेश्वर के वचन के प्रति शाऊल की **अनाज्ञाकारिता** का परिणाम **उसे चूकाना** पड़ा :

1. अपना पद खो कर 2. अनेक समस्याएं के द्वारा

क्योंकि "बलवा करना और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान पाप है" शाऊल ने शैतान के राज्य में कदम रखा। उसने अपने पापों का अंगीकार नहीं किया और न ही पश्चाताप किया, इस कारण :

1 शमुएल 16:14 यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और **यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।**

- पुराने नियम में जिन लोगों को परमेश्वर अपनी सेवा के लिए चुनता था उन्हें सशक्त करने और अधिकार देने के लिए पवित्र आत्मा दिया जाता था। जब वे आज्ञा नहीं मानते तो पवित्र आत्मा चला जाता था।
- नीतिवचन 17:11 विद्रोही मनुष्य बुराई की ही खोज में रहता है, अतएव उसके विरुद्ध एक क्रूर दूत भेजा जाएगा।

यह राजा शाऊल द्वारा अपने पर परमेश्वर के अधिकार को, उसकी आज्ञा न मानने का, गंभीर परिणाम था।

- शाऊल परमेश्वर का था, इसलिए "दुष्ट आत्मा" बिना परमेश्वर की अनुमति के शाऊल को सता नहीं सकती थी।
- शाऊल का आज्ञा न मानना और बलवा करना, भावी कहने वालों से पूछने के समान पाप है, और जिसकी आज्ञा मानते हैं उसके दास बन जाते हैं, इसलिए "दुष्ट आत्मा" के पास वैध अधिकार था। अतः परमेश्वर ने उसे सताने की आज्ञा दे दी।

- क्योंकि अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के महान प्रेम के कारण, और उसके गवाह होने की हमारी जिम्मेवारी के कारण, इस पृथ्वी पर उसके राजदूत होने के कारण, वह हमारी ताड़ना करता है "ताकि हम बुराई से बचें"।

"परमेश्वर की संतान" होने के नाते "*किसी अधिकार"* का हमारे ऊपर तब तक कोई अधिकार नहीं है जब तक उसे हमारे अधिकारी द्वारा अनुमति न मिले।

जिस प्रकार यीशु ने कहा : इस पर पिलातुस ने उससे कहा, "... क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है, और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।" यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता। यूहन्ना 19:10-11

- हम भी यह कथन कह सकते हैं। जो "परमेश्वर के पुत्र **यीशु**" के लिए सच था वह हम "परमेश्वर की संतानों" के लिए भी सच है।
- पृथ्वी या आत्मिक अधिकार का हमारे ऊपर तब तक कोई अधिकार नहीं है यदि उसे ऊपर से दिया न जाए।

इसलिए मैं इस बात को बल दे कर कहता हूँ : इसलिए परमेश्वर के **अधीन** हो जाओ। शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। याकूब 4:7

- इससे हम मत्ती 18:21-35 को भी समझ सकते हैं (दंड देने वाला, पद 34)

प्रश्न यह है कि आप किस की आज्ञा मानते हैं? किसके आधीन रहते हैं?

आपके साथ जो कुछ होता है वह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है :
आप किसका सामना करते हैं? आप किसकी आज्ञा मानते हैं?

3. उसका जीवन कम हो जाएगा

1 शमुएल 28:19 फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा। **और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा;** और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।"

वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर के लोगों के ऊपर उच्च अधिकार दिया गया, और जो अपनी निरंतर अनाज्ञाकारिता या विद्रोह के द्वारा हानिकारक बन गया, उसे परमेश्वर अपने पास बुला सकता है।

नीतिवचन 29:1 जो बार बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।

परमेश्वर की आज्ञाकारिता और स्वस्थ तथा दीर्घ जीवन के बीच सीधा संबंध है :

इफिसियों 6:1-3 हे बालको, प्रभु में **अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो,** क्योंकि यह उचित है। 3 अपनी माता और पिता का **आदर** कर (यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है), 3 कि **तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।"**

नीतिवचन 3:7-8 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; **यहोवा का भय मानना**, और बुराई से अलग रहना। ऐसा करने से तेरा **शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियाँ पुष्ट रहेंगी।**

1 कुरिन्थियों 11:27-32 इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। **इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।** यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

मिस्र से छुड़ाए इस्राएलियों के सन्दर्भ में **1 कुरिन्थियों 10:1-13** में कड़ी चेतावनी दी गई है। (11) परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और **वे हमारी चेतावनी के लिये** जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं **लिखी गईं हैं।**

इस्राएलियों ने अपने ऊपर अधिकारियों के विरुद्ध **बलवा** किया और देश में प्रवेश करने और आज्ञा मानने से इनकार किया :

गिनती 14:22-25 उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और **मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार** (अड़ियल रवैया) **मेरी परीक्षा की,** और मेरी बातें नहीं मानीं, 23 इसलिये जिस देश के विषय मैं ने **उनके पूर्वजों से शपथ खाई,** उसको **वे कभी देखने न पाएँगे**; अर्थात् जितनों ने मेरा **अपमान** किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा। 24 परन्तु इस कारण कि **मेरे दास कालिब के साथ और ही आत्मा है,** और उसने पूरी रीति से **मेरा अनुकरण किया है**, मैं उसको उस देश में जिसमें वह हो आया है पहुँचाऊँगा, और **उसका वंश** उस देश का अधिकारी होगा।

- पिताओं, तुम्हारा व्यवहार, तुम्हारी आत्मा का तुम्हारे बच्चों के व्यवहार और आत्मा पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

मूसा के विरुद्ध कोरह का बलवा - जो उन पर अधिकारी था। कोरह तब तक परमेश्वर के अधिकारी, मूसा के विरुद्ध दस बार बलवा कर चुका था।

गिनती 16:32 और पृथ्वी ने अपना मुँह खोल दिया और उनका, और उनके घर-द्वार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया।

मूसा ने - परमेश्वर की आज्ञा न मानकर उसके विरुद्ध बलवा किया।

निर्गमन 17:2-7 मिस्र से निकल आने के तुरंत बाद जंगल में :

इसलिए वे लोग मूसा से **झगड़ा** करके कहने लगे, "हमें पीने के लिए पानी।" और मूसा ने उनसे कहा, "**तुम मुझ से क्यों झगड़ते हो**? **तुम यहोवा की परीक्षा** क्यों करते हो?" 3 ... उन्होंने मूसा के विरुद्ध **कुड़कुड़ाते** हुए कहा, "तू हमें बाल-बच्चों और पशुओं समेत प्यासा मार डालने के लिए मिस्र से क्यों ले आया है?" 4 तब मूसा ने यहोवा की दुहाई दी और कहा, "मैं इन लोगों से क्या करूँ? ये सब तो **मेरा पथराव** करने को ही तैयार है।" 5 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "... जिस **लाठी से तू ने नील नदी पर मारा** था, उसे अपने हाथ में लेकर (दंड की लाठी) इन लोगों के आगे बढ़ जा। 6 देख, मैं तेरे सामने होरेब **पहाड़** पर खड़ा होऊँगा। और **तू चट्टान पर मारना** और उसमें से पानी निकलेगा जिससे कि लोग पीएं।" ... और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा। क्योंकि इस्राएलियों ने वहां झगड़ा किया था और यह कहकर यहोवा की परीक्षा की थी, "क्या यहोवा हमारे बीच में है या नहीं?"

- यह "उस चट्टान" के **क्रूसिकरण** का चित्रण करता है। उस चट्टान पर मारने के बाद उसके लोगों के लिए जीवन की आशीषें और दान बह निकलती हैं।

  1 कुरिन्थियों 10:4 और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी, और **वह चट्टान मसीह था।**

जब उन्होंने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने से इनकार किया और बलवा किया तो वे वापस जंगल में पहुँच गए।

गिनती 20:1-13 1 पहिले महीने में सारी इस्त्राएली मण्डली के लोग सीनै नाम जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे ... 2 वहां मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; सो **वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए।** 3 और लोग यह कहकर मूसा से **झगड़ने लगे,** कि भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए। 4 और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहां मर जाए? 5 और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकाल कर इस बुरे स्थान में पहुंचाया है? यहां तो बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार, कुछ नहीं है, यहां तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है। 6 तब मूसा और हारून मण्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जा कर अपने मुंह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उन को दिखाई दिया। 7 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 8 "**उस लाठी** को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते **उस चट्टान से बातें कर**, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से **तू चट्टान में से उनके लिये जल निकाल कर** मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।

- उस चट्टान - जो यीशु मसीह का एक प्रकार था - के क्रूसिकरण के बाद न्याय और दंड हुआ, आपने जो अब करना था वह यह था कि उस चट्टान से **बात करें** और जीवन का दान और आशीषें उसमें से बह निकलेंगी। एक और क्रूस या बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

9 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार **मूसा ने उसके साम्हने से लाठी को ले लिया।** 10 और मूसा और हारून ने मण्डली को **उस चट्टान** के सामने इकट्ठा किया, तब मूसा ने उससे कह, "हे **दंगा करनेवालो**, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा? (मूसा क्रोधित था) 11 तब मूसा ने **हाथ उठा कर लाठी चट्टान पर दो बार मारी;**

- मूसा ने भी विद्रोह किया और आज्ञा का उल्लंघन किया, परंतु ...

उस में से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे।

- यह मूसा का विद्रोह था न कि लोगों का ।

12 परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया **(भरोसेमंद होने में असफल रहा)** , और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि **में पवित्र नहीं ठहराया**, इसलिये तुम इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे जिसे मैं ने उन्हें दिया है।

- बलवा करने या आज्ञा न मानने का परिणाम :
    - उसके जीवन और सेवकाई को छोटा कर दिया गया
    - वह प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश नहीं कर पाया।
    - फसह के मेमने के लहू की वाचा के कारण मूसा निश्चय ही स्वर्ग में है
- इसलिए : हे मेरे भाइयो, तुम में से बहुत **शिक्षक** न बनें, यह जानते हुए कि हम शिक्षक और भी **कठोरतम दण्ड के भागी होंगे।** याकूब 3:1-2

लूका 12:42 प्रभु ने कहा, "ऐसा विश्वासयोग्य और समझदार भण्डारी कौन है जिसे उसका स्वामी अपने सेवकों के ऊपर अधिकारी नियुक्त करे ...

- परमेश्वर उन लोगों को ढूँढ़ रहा है जिनको वह भरोसे के साथ अधिकार दे सकता है।

लूका 12:48 इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, **उससे बहुत माँगा जाएगा**; और जिसे बहुत **सौंपा गया** है, **उससे बहुत लिया जाएगा।**

V. परमेश्वर द्वारा नियुक्त अधिकार के चार ढांचे

1. परिवार : यीशु > पिता > मां > बच्चे

1 कुरिन्थियों 11:2-4 परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि **हर एक पुरुष का सिर मसीह है**, और स्त्री का सिर **पुरुष** है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

- जो पुरुष के आधीन हैं उनके लिए परमेश्वर पुरुष को जिम्मेवार ठहराता है।

उदाहरण : जब हव्वा ने पाप के लिए उकसाया था, तो परमेश्वर ने आदम से इसके बारे में बात की (उत्पत्ति 3:9-12)।

उत्पत्ति 3:9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा ...

कुलुस्सियों 3:20 **हे बालको**, सब बातों में अपने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।

इफिसियों 6:1-3 **हे बालको**, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। 2 "अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है) 3 जिससे कि तेरा भला हो और तू पृथ्वी पर बहुत दिन जीवत रहे।

नीतिवचन 6:20-21 हे मेरे पुत्र, **अपने पिता** की आज्ञा का पालन कर, और **अपनी माता** की शिक्षा को न तज। इनको अपने हृदय में सदा गांठ बाँधे रख; और अपने गले का हार बना ले।

नीतिवचन 30:17 जिस आँख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आँख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे खा डालेंगे।

नीतिवचन 15:5 मूर्ख अपने पिता की ताड़ना का तिरस्कार करता है, परन्तु जो पिता की डाँट-डपट का आदर करता है, वह चतुर है।

जिस तरह से एक किशोर अपने माता-पिता के अधिकार को जवाब देता है उसी प्रकार से जल्द ही वह सभी अधिकारियों को जवाब देगा।

माता-पिता को चाहिए कि जब भी उनके बच्चे आज्ञा न माने तो प्रेम और ताड़ना के साथ उनसे व्यवहार करें।

2. सरकारी : राष्ट्रीय नेता > स्थानीय नेता > नागरिक

1 पतरस 2:13-14 प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए **हर एक प्रबन्ध** के **अधीन** रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है, 4 और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं।

रोमियों 13:1-7 हर एक व्यक्ति शासकीय **अधिकारियों के अधीन** रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। 2 इसलिये जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करनेवाले दण्ड पाएँगे। 3 क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण है; अतः यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर, और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी; 4 क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं; और परमेश्वर का सेवक है कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे। 5 इसलिये अधीन रहना न केवल उस क्रोध के डर से आवश्यक है, वरन् विवेक भी यही गवाही देता है।

3. कलीसिया : यीशु > कलीसियाई अगुवे > कलीसिया के सदस्य

1 थिस्सलुनीकियों 5:12-13 हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो। 13 और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो। आपस में मेलमिलाप से रहो।

इब्रानियों 13:17 अपने अगुवों की **आज्ञा मानो** और उनके **अधीन** रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते हैं **जिन्हें लेखा देना पड़ेगा;** वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

1 तीमुथियुस 5:17 जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ।

1 पतरस 5:1-3 तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूँ कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं पर मन लगा कर। जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिये आदर्श बनो।

4. व्यापार : यीशु > मालिक > कर्मचारी

कुलुस्सियों 3:22-25 हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी **आज्ञा का पालन करो,** मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सीधाई और परमेश्वर के भय से।

23 जो कुछ तुम करते हो, **तन मन से करो,** यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो;

24 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से (लोगों से नहीं) **मीरास** (सच्ची) **मिलेगी**; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।

25 क्योंकि **जो बुरा** करता है वह अपनी बुराई का फल पाएगा, और (परमेश्वर के साथ) वहाँ किसी का पक्षपात नहीं (चाहे कोई व्यक्ति किसी भी पद पर, दास या स्वामी, क्यों न हो) ।

1 पतरस 2:18 हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों **के अधीन रहो**, न केवल उनके जो भले और नम्र हों **पर उनके भी जो कुटिल हों।**

1 तीमुथियुस 6:1-2 जितने दासता के जूए के नीचे हैं, वे अपने अपने स्वामी को **बड़े आदर के योग्य** जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो। जिनके स्वामी विश्वासी हैं उन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें, वरन् **उनकी और भी सेवा करें,** क्योंकि इससे लाभ उठानेवाले विश्वासी और प्रेमी हैं। इन बातों का उपदेश किया कर और समझाता रह।

VI. हमारे जीवन में परमेश्वर की इच्छा - उसकी अगुवाई - अकसर उन अधिकारियों के द्वारा प्रकट होती है जिन्हें उसने हमारे ऊपर ठहराया है।

वयस्कों के लिए :

परमेश्वर हमें इस बात का आश्वासन देता है कि वह हमारे ऊपर ठहराए गए लोगों के हृदयों को बदल सकता है :

नीतिवचन 21:1 यहोवा के हाथ में राजा का हृदय तो जल की नालियों के समान ही है, वह उसे जहां चाहता है मोड़ लेता है।

युवाओं के लिए

नीतिवचन 22:15 बच्चे के हृदय में तो मूढ़ता की गांठ लगी रहती है। अनुशासन की छड़ी उसे खोलकर दूर कर देती है।

नीतिवचन 6:20-22 हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा को न तज। इनको अपने हृदय में सदा गांठ बाँधे रख; और अपने गले का हार बना ले। **वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई**, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझ से बातें करेगी।

बिना किसी मार्गदर्शन के बहुत से नवयुवक बहक रहे हैं और लगातार गलत निर्णयों को ले रहे हैं। यह इसलिए है **क्योंकि** उन्होंने अपने माता-पिता के **अधिकार** में रहने को या तो **नकार** दिया या उसके विरूद्ध **बलवा** किया है।

अपने माता-पिता की अधीनता से बचने के लिए बहुत से युवा **भागकर** सेना में भरती हो जाते हैं। तब वे कठिन रीति से अधिकार में रहना सीखते हैं।

अपने माता-पिता की अधीनता से बचने के लिए बहुत से जवान लड़कियां घर से **भाग कर** शादी कर लेती हैं और फिर बाद में पता चलता है कि अब उनका पति उनसे उखड़ा-उखड़ा सा रहता है।

अधिकारियों से भागने के विषय में परमेश्वर क्या कहता है ?

उत्पत्ति 16:9 तब यहोवा के दूत ने उस से कहा, " अपनी स्वामिनी के **पास लौट जा** और **अपने आप को उसके अधीन कर दे।"**
(हाजिरा अब्राहम की पत्नी सारा से भाग रही है)

हमारे स्वभाव को यीशु के सदृश्य होता हुआ देखने के लिए परमेश्वर हमारे ऊपर ठहराए गए हर एक अधिकार का इस्तेमाल करेगा ताकि वह हमारे चरित्र के खुरदरे कोनों को 'तराश' सके, जिस प्रकार सुनार हीरे को काटता, तराशता और आकार देता है।

परमेश्वर ने हमारे ऊपर जो अधिकारी ठहराए हैं

उन्हें परमेश्वर **साधन** की तरह इस्तेमाल करता है

ताकि हमारे **चरित्र की सैकड़ों कमियां** दूर हों और हम सिद्ध बनें।

उदाहरण : यूसुफ - इससे पहले वह फिरौन के आधीन अधिकारी बनता, उसके **घमंड** का सुधारा जाना अवश्य था।

नीतिवचन 8:13 यहोवा का भय मानना, बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अहंकार तथा बुरी बात और कुटिल बातों से मुझे घृणा है।

VII. अनाज्ञाकारिता के चार कारण

1. **हठीलापन**

1 शमूएल 15:23 देख **बलवा** करना और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृह देवताओं की पूजा के तुल्य है।

रोमियों 2:5 पर तू अपनी कठोरता और **हठीले मन** के कारण उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

यिर्मयाह 7:24 फिर भी उन्होंने मेरी आज्ञा नहीं मानी, न अपना कान लगाया, परन्तु अपने हृदय के **हठीलेपन** पर **अपनी ही युक्तियों के अनुसार वे चलते रहे** और आगे बढ़ना छोड़कर पीछे हटे।

यिर्मयाह 18:12 परन्तु वे कहते हैं, 'ऐसा नहीं होने का, **हम तो अपनी ही कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे** और अपने बुरे मन के **हठ** बने रहेंगे।'

2. **तर्कवाद**

1. कार्य और विश्वास के लिए तर्क को श्रेष्ठ मार्गदर्शक मानकर उस पर निर्भर रहना।

2. यह सिद्धान्त कि अधिकारियों को मानने या आत्मिक प्रकाशन की बजाय तर्क का प्रयोग करना, कार्य या विश्वास के लिए एक अच्छा या सबसे अच्छा आधार है।

3. किसी के आचरण के लिए अपने को सन्तुष्ट करने वाले परन्तु गलत तर्क को सोचना।

तर्क जो परमेश्वर के अधिकार को स्वीकार करने के बजाय मनुष्यों के **भय** से प्रेरित था, उसने अब्राहीम को झूठ बोलने के लिए प्रेरित किया।

उत्पत्ति 20:11 अब्राहम ने कहा, "**मैं ने यह सोचा** था कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; इसलिये ये लोग मेरी पत्नी के कारण मुझे घात करेंगे।

मनुष्यों के भय ने याकूब के मन में **तर्क को जन्म दिया** और उसने लाबान को धोखा दिया।

उत्पत्ति 31:31 याक़ूब ने लाबान को उत्तर दिया, "**मैं यह सोचकर डर गया था** कि कहीं तू अपनी बेटियों को मुझसे छीन न ले।

3. परमेश्वर के लिए **प्रेम** और लोगों (अधिकारियों) के प्रति सम्मान में कमी।

जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; ... यूहन्ना 14:21

यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा। यूहन्ना 14:23

जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा। यूहन्ना 14:24

4. परमेश्वर का **भय** कम है या व्यक्ति में कमी है।

अतः हम **अपने आप पर** ... **अपनी बुद्धि पर** ... ज़्यादा निर्भर करते हैं।

VIII. अधिकारियों को जवाब

हमारे ऊपर अधिकार रखने वाले लोग चाहे जितने असंगत या अनुचित क्यों न हों, हम उनके प्रति उत्तरदायी हैं।

परमेश्वर हमारी **दृष्टिकोण को परिपक्व रीति से** विकसित करने के लिए सबसे कठोर लोगों को प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल करता है।

हम जिस परिस्थिति से हो कर जा रहें हैं उससे अधिक परमेश्वर की रुची इस बात में है कि हम उन परिस्थितियों का **क्या जवाब** देते हैं।

जिन बातों की परमेश्वर योजना बनाता है या जिनका वह हमें अनुभव कराता है, उसका उद्देश्य यह होता है कि हमारा **आचार-व्यवहार** उसके पुत्र यीशु मसीह के अनुकूल हो जाए।

जो अधिकार में हैं वे जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, उसे **समझना** बहुत आवश्यक है।

- ध्यान से सुनें
- उनकी आंखों से देखने का प्रयास करें

विशेषकर तब जब हमें ऐसा कुछ करने को कहा जाता है जो

हमारे मूल विश्वास या पवित्र शास्त्र के विरूद्ध हो।

अंतिम शब्द : मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। (प्रेरितों के काम 5:29)

लेकिन जैसे हमारी प्रतिक्रिया होती है, वह अधिक महत्वपूर्ण है।

उदाहरण के लिए **दानिय्येल:**

दानिय्येल को विधर्मी विदेशी शासक द्वारा बन्दी बना कर उसके घर, परिवार, और देश से दूर ले जाया गया तथा उसे वे सब करने को **कहा गया** जो पवित्र शास्त्र के विरूद्ध था ।

दानिय्येल 1:8 परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में निश्चय कर लिया ... अपने आप को अपवित्र न करे

दानिय्येल ने अपने ऊपर अधिकारियों के प्रति अपनी **परिपक्व मनोवृति** को प्रदर्शित किया। उसके आचरण के कारण उसके अधिकारियो की उस पर **कृपादष्टि हुई।** उसने उनका कहा मानने से इनकार कर दिया।

जब दानिय्येल को वह सब खाने को कहा गया जो पवित्र शास्त्र का उल्लंघन करता है, तो वह समझ गया कि इसका **मूल उद्देश्य** उसके विश्वास को दूषित करना नहीं परन्तु उसे स्वस्थ और बुद्धिमान बनाना था। उसने एक ऐसा **विकल्प** रखा जिससे उसके मूल विश्वास का भी उल्लंघन न हो और अधिकारियों के लक्ष्य की प्राप्ति भी हो जाए।

उसकी विनती में **आदर**, **रचनात्मकता** और **शब्दों के सुविचारित** चुनाव पर ध्यान दें :

दानिय्येल 1:12-14 “मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि अपने दासों को दस दिन तक जाँच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी ही दिया जाए। तब हमारे चेहरे और राजा का भोजन करनेवाले जवानों के चेहरे तेरे सामने देख लिए जाएं, फिर जैसा तू उचित समझे, वैसा ही व्यवहार इन दासों से करना।” अतः उसने उनकी यह बात मानकर उन्हें दस दिन तक जांचा।

जब हमारा व्यवहार सही है और हमने नम्रता और सावधानी पूर्वक अपनी विनती को रखा है, तो फिर हमें ठहर कर उनके निर्णयों की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

हमें परमेश्वर को "उनका हृदय बदलने " के लिए समय देना चाहिए।

नीतिवचन 16:7 जब यहोवा मनुष्य के चाल-चलन से प्रसन्न होता है, तो वह उसके शत्रुओं को भी उसका मित्र बना देता है।

नीतिवचन 21:1 यहोवा के हाथ में राजा का हृदय तो जल की नालियों के समान ही है, वह उसे जहां चाहता है मोड़ लेता है।

हालांकि फिरौन ने अपने हृदय को कठोर बनाए रखा फिर भी परमेश्वर उस पर दबाव बढ़ाता रहा जब तक वह इस्राएलियों को छोड़ देने के लिए तैयार न हो गया। तब तक, इस्राएली भी अपने शासकों की आज्ञा मानते-मानते मजबूत हो गए।

"और उसके कुल में से कोई निर्बल न था।" भजन संहिता 105:37

जब हम अपने ऊपर अधिकारियों की आज्ञा मानते हैं, धैर्य पूर्वक सब समस्याओं को सह लेते हैं और दुख भी उठा लेते हैं और बलवा नहीं करते, तो परमेश्वर "सब बातों में हमारे लिए भलाई को उत्पन्न करता है"।

जब अधिकारियों ने प्रेरितों से प्रचार बंद करने को कहा, तो पतरस ने जवाब दिया, मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है। (प्रेरित 5:27-32) और वह इसका परिणाम भुगतने के लिए तैयार था, यहाँ तक कि यीशु के समान क्रूस चढ़ाए जाने के लिए भी।

IX. जब आपसे ऐसा काम को करने के लिए कहा जाए जिसे आप गलत समझते हैं, तो वे सात कदम जो आपको उठाने हैं।

1. अपने व्यवहार को जांचें

- निष्ठाहीनता का आधार एक स्वतन्त्र आत्मा है।
- आत्म-धार्मिकता का आधार एक दोषी ठहराने वाली आत्मा है।
- घमण्ड का आधार एक अकृतज्ञ आत्मा है।
- बेईमानी और गरीबी का आधार एक सुस्त आत्मा है।
- स्वार्थ का आधार एक कड़वाहट की आत्मा है।
- असयंम का आधार एक अशुद्ध आत्मा है।

2. अपने विवेक को साफ़ करें

- अपने उस व्यवहार को ठीक करें जिसने ठेस पहुंचाई है।
- अधिकारियों की इच्छाओं और अधूरे पड़े निर्देशों को पूरा करें।
- अपनी गलती स्वीकार कर लें और क्षमा मांगें।
- सही सम्बन्धों को पुनः स्थापित करने के लिए आवश्यक सुधार करें।
- दूसरों को ठेस पहुंचाने से बचने के लिए अपनी स्वतन्त्रता को सीमा में रखना सीखें।

3. मुख्य उद्देश्य को पहचानना

- लोगों से पूछें कि उनकी इच्छा, उनका लक्ष्य क्या है।
- इस बात को समझने का प्रयास करें कि वे यह आज्ञा क्यों दे रहें हैं।
- उनसे कहें कि वे आप को यह समझाए।

4. रचनात्मक विकल्पों को तैयार करें

- रचनात्मक होने से रोकने वाली हर विरोधी आत्मा को हटाएं।
- कठिन परिस्थितियों का प्रयोग अपने सन्दर्भ को बढ़ाने के लिए करें।
- कठिन परिस्थितियों के लिए नीतिवचन से अन्तर्दृष्टि प्राप्त करें।
- ऐसे विकल्प को तैयार करें जिसमें वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति को देख सके।

5. अपने ऊपर अधिकारी से अनुरोध करें

- सीखने और सेवक की आत्मा रखें।
- दोष लगाने वाली आत्मा के बिना अपने व्यक्तिगत विश्वास को समझाएं।
- रचनात्मक विकल्प को सामने रखें।
- उन्हें समझाए कि कैसे इसके द्वारा उनके लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।
- अन्तिम निर्णय उनके ऊपर छोड़ दें।

6. उनके मनों को बदलने के लिए परमेश्वर को समय दें

- आप अपेक्षा कर सकते हैं कि परमेश्वर अधिकारी के ऊपर बाहरी दबाव डाले।
- इस बात की भी अपेक्षा करें कि वह आप पर अतिरिक्त दबाव डाले
- इस बात को पहचाने कि परमेश्वर अपने दबाव को हमारे लाभ के लिए इस्तेमाल करेगा।
- सही उत्तरों का निर्माण करें जो उसके बदले हुए निर्णयों का आधार होगा।

7. गलत कार्य न करने पर भी दुःख उठाना

- चेले प्रभु यीशु का इनकार करने की बजाय अपने परिवार के द्वारा त्यागे जाने के लिए तैयार थे। (मत्ती 10:32-39)
- धार्मिक अगुवों और सरकारी अधिकारियों के द्वारा प्रतिबन्ध लगा देने के बावजूद चेले सुसमाचार का प्रचार करते रहे। (प्रेरितों के काम 4:19)
- परमेश्वर की आराधना बन्द करके राजा को दण्डवत करने की बजाय दानिय्येल मरने के लिए तैयार था। (दानिय्येल 6:12-16)।

अंतिम भाग का संदर्भ :

Research in Principles of Life Basic Seminar Textbook

Institute in Basic Youth Conflicts, Inc.